युवा पीढ़ी से बहुत कुछ सीखा जा सकता है

ALOK KUMAR CHAUDHARY @3260747

3

हाल ही में मुझे एसबीआई यूथ फॉर इंडिया प्रोग्राम के 2019-20 बैच के कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त युवा सदस्यों से बातचीत करने का अवसर मिला। ये सभी उत्साह से भरपूर हैं और उम्र में भी बहुत कम हैं, पर इनके इरादे फौलादी हैं। ये उम्र ही ऐसी होती है। मैंने जब उनसे पूछा कि आपने फैलोशिप प्रोग्राम क्यों ज्वाइन किया? आपने तो इतनी ऊँची शिक्षा पाई है। आपको तो और बहुत से बड़े काम मिल सकते थे? एक बात और। ये सभी अलग अलग पृष्ठभूमि वाले परिवारों से आए हैं, पर जवाब देने में मैंने उन सबमें गजब की एकजुटता देखी। उन्होंने जो जवाब दिया, उसने मुझे बहुत प्रभावित किया। उनका कहना था कि वे कमजोर और गरीब लोगों के जीवन में बदलाव लाने के लिए कुछ बड़ा करना चाहते हैं। उन सबके जवाब में यह साफ झलक रहा था कि गरीबों के जीवन में बदलाव लाना ही उनका उद्देश्य है।

इतनी कम उम्र में, समाज के कमजोर लोगों के जीवन में बदलाव लाने का यह जोश, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। यह देखकर मुझे हैरानी ही हुई कि ये युवा जो अच्छे खासे पढ़े लिखे हैं। इन्हें बड़े ओहदे मिल सकते हैं। ये शहर की आराम की और चकाचौंध वाली जिंदगी छोड़कर 13 महीने के लिए अपने घर से सैकड़ों मील दूर इन गाँव में काम करने के लिए आए हैं। भारत के गाँवों के धूलधक्कड़ वाले कष्टों भरे जीवन का इन्हें भी तो पता था, फिर भी इन्होंने मुश्किलों भरे इस जीवन को ही चुना। यह देखकर मुझे ताज्जुब हुआ कि इनमें 70% लड़कियाँ हैं। इनमें भी 70% को तो अपनी फैलोशिप पूरी करने के बाद गाँवों में ही काम करना पड़ेगा।

इन सबसे बातचीत में मैं यह सोचने लगा कि आखिर क्या चीज है, जो इन्हें यहाँ खींच लाई है। क्यों इन्होंने इतनी कम उम्र में इस तरह का परेशानियों भरा जीवन चुना है। मुझे लगता है कि इन्होंने अपने जीवन के उद्देश्य को अच्छे से समझ लिया है। इन्होंने कहीं न कहीं भीतर से यह महसूस

किया है कि पॉवर, पैसे और सुख-सुविधाओं का कोई अंत नहीं है। जितना इनमें डूबते जाओ उतना ही इनकी लालसा बढ़ती जाती है। ये युवा सभी आकर्षणों को छोड़ कमजोर और गरीब लोगों को उनके कष्टों से उबारने में ही संतोष ढूंढ रहे हैं। हम सबके जीवन में भी कोई न कोई उद्देश्य रहा है। पर इन लड़के-लड़कियों की तो उम्र ही कितनी कम है। और इस कम उम्र में यह जोश। इनके इस जज्बे की जितनी सराहना की जाए कम ही होगी।

वर्ष 2017-18 फैलोशिप प्रोग्राम बैच की सुश्री काव्या रमन तो बेंगलूरू से इलेक्ट्रीकल इंजीनियर और डेटा एनालिस्ट की जॉब छोड़कर गाँव में वेस्ट मैनेजमेंट के काम के लिए आई हैं। सुश्री काव्या ने वेस्ट मैनेजमेंट के एक ऐसे मॉडल की खोज की है, जो अन्य क्षेत्रों में भी काम आएगा।

मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि इन युवाओं के माता-पिता ने भी इन्हें शहर की आराम की जिंदगी चुनने के लिए जरूर कहा होगा। मैं इन युवाओं के जज्बे को सलाम करता हूँ, जिन्होंने अपने मन की बात मानी। गाँव के कमजोर और गरीब वर्ग के जीवन में बदलाव लाने के काम को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया।

अपने जीवन के उद्देश्य को समझकर ये युवा अपने 13 महीने के फैलोशिप प्रोग्राम में अपने फौलादी हौसले के साथ साधारण से असाधारण की यात्रा तय करेंगे। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि इनका काम मानवता की सच्ची सेवा होगा। मैं समझता हूँ कि यदि हम सभी भी अपने काम को इसी जोश और जज्बे के साथ करें, तो हम भी अपने बैंक और देश को नई ऊँचाइयों पर ले जा सकते हैं।

हम सभी जानते हैं कि बेहतरी संयोग से नहीं बदलाव से ही लाई जा सकती है। बदलाव हमें किसी दूसरे में नहीं अपने काम करने के तरीके और अपने व्यवहार में लाना है। हम चाहे शाखा में या किसी प्रशासनिक कार्यालय में हों। हमें इन युवाओं का उदाहरण अपने सामने रखना होगा। अवसरों की आज कोई कमी नहीं है। हमें यह देखना है कि हम इनसे कितना लाभ उठा सकते हैं और इनसे कितना बदलाव ला सकते हैं।

(आलोक कुमार चौधरी)
उप प्रबंध निदेशक (मानव संसाधन) एवं
कॉरपोरेट विकास अधिकारी